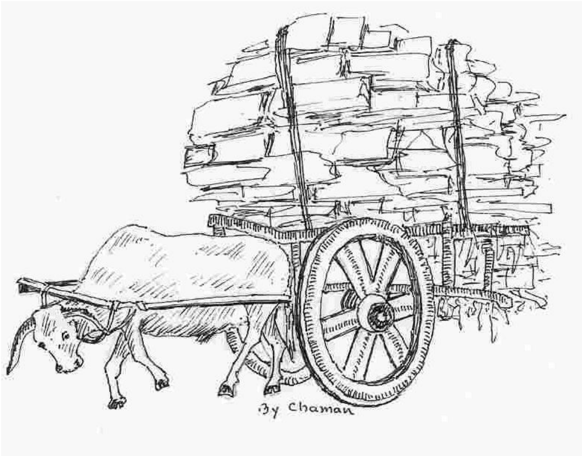

असगर बरद

बलवन्त एकटा भद्दा आ कुरुप बरद छल । ओकर सींग एकदमे लम्बा आ ओकर पएर एकदमे छोट छल । कहियो-काल जखन बलवन्त अपन माथ निचा करैत छल त ओकर सींग जमीन मे ठेक जाइत छलैक आ ओ ठोकर खा कऽ खैस परैत छल । ओहन समय मे औरो बरद सभ ओकर खिल्ली उडबैत छल । कियाक तऽ बलवन्त किछु भिन्न आ अजीब प्रकारक क्रियाकलाप करैत छल, ओहन समयमे दोसर बरद सभ ओकरा सँ दूर रहैत छल । ताहि सँ बलवन्त अपना कैं एकदमे असगर अनुभूति करैत छल ।

और सभ चीज सँ बढि कऽ बलवन्त चाहैत छल जे दोसर बरद सभ ओकरा स्वीकार करैक । ओ मनमे सोचैत छल जे, जँ हम सभ सँ बलवान वा सभ सँ फुर्तिगर बरद मात्र बनि सकितहुँ त औरो बरद सभ हमरा स्वीकार करैत । ताहि बलवन्त बलवान बनक लेल कडा परिश्रम करय लागल । जतेक समयमे औरो बरद सभ तिनटा गाडी कैं वजन खींचैत छल ततेक समयमे बलवन्त चारिटा गाडी कैं वजन खींचैत छल । जखन औरो बरद सभ एक दिनमे अपन गाडी दश किलोमीटर तानैत छल ओतेक समय मे बलवन्त बारह किलोमीटर तक तानैत छल । किछुए समयमे बलवन्त औरो बरद सभ सँ बलवान भऽ गेल । मुदा बलवन्त कैं स्वीकार करक बदलामे दोसर बरद सभ ओकरा अस्वीकार केलक । ओ सभ सोचैत छल जे बलवन्त ओकरा सभ कैं खराब बनाबऽ के प्रयास करैत अछि ।

ओ सभ एकर नीक चालि-चलन आ शक्ति कैं गलत अर्थ लगेलक । शक्ति द्वारा स्वीकार प्राप्त करऽ मे असफल बलवन्त औरो सभ सँ फूर्तिगर

बनऽ के प्रयास केलक । ओ गाडी तानक लेल असल तरीका आ लक्ष्यमे पहुँच वला सभ सँ छोट रास्ता सभकेँ अध्ययन केलक । ओ नीक भोजन पाबऽ वला जगह पता लगेलक । ओ अपन मालिक केँ तौरतरीका सभक अध्ययन केलक । ताहि ओ अपन मालिक केँ कहऽ शुरु केलक जे भारी लऽ जयबाक लेल कोन रास्ता सभ सँ नीक रास्ता होयत । जखन बुढ बरद सभ संग-संग बैसि कऽ बात करैत छल त बलवन्त सेहो ओकरा सभक संग बैसैत छल जाहि सँ ओकर सभक संस्कार सिख सकय, ताहि ओ सभ बात ध्यान दकऽ सुनैत छल । ओकर सभक उपदेश के ओ पूर्ण रुपसँ अनुशरण केलक आ सभ सँ ज्ञानी बरद बनि गेल । एहन होइतो और बरद सभ बलवन्त केँ स्वीकार नहि केलक ।

ओकरा सभक नजरि मेँ बलवन्त घमण्डी आ स्वधर्मी बनि गेल छल । जखन बलवन्त ओकरा सभकेँ अगुवाई करक कोशिश करैत छल तऽ ओ सभ नहि बुझैत छल । बलवन्त एहि सँ औरो निरुत्साहित भऽ गेल । ओ मन मन कहलक जे, कि हमरा स्वीकार करऽ वला केओक नहि अछि ? कि एहन केओक नहि अछि जे हमरा जकाँ लम्बा सींग, छोट पएर बला बरद केँ प्रेम कऽ सकैत ?

तकरबाद बलवन्त एकदिन प्रेम नामक दोसर बरद केँ भेटलक । बलवन्त अपन समस्या सभक बारेमे ओकरा सुनेलक । बलवन्त प्रेम केँ कहलक जे हमरा केओक प्रेम नहि करैत अछि । प्रेम अपन मालिक मे भेल महान प्रेमक बारेमे बलवन्त केँ सुनौलक । प्रेम ओकरा कहलक जे हम एकटा एकदमे भारी गाडी तानि रहल छलौं । हम सोचलौं जे ई हमर डाँड परहक भारी अछि । मुदा हम पता लगेलौं जे इहो सँ बेसी भारी त हमर पापक भारी अछि । हमर मालिक हमरा पर सँ ई बोझ हटा देलन्हि आ ओ कहलन्हि जे हम हुनकर निर्देशन सभक पालन नहि कऽ कऽ पाप केने छी । मात्र हमरा एतेक स्वीकार करक छल जे हम पाप केने छी आ हमर ई पाप क्षमा कऽ देबक लेल प्रार्थना करक छल ।

जखन हम ओना केलहुँ त ओ हमरा जीवनक जल देलन्हि जाहि द्वारा हमर पाप धोआ गेल । ओ हमर बोझ हटा देलन्हि आ आब हम ओ भारी बोझ सँ स्वतंत्र छी । जीवनक जल पीबऽ सँ पहिने हमर मालिक ई नहि कहलन्हि जे हमरा बलवान वा फूर्तिगर बनक अछि । पीबऽ सँ पहिने ओ हमरा ई आज्ञा नहि देलन्हि जे पहिने नीक बरद बनह । बल्कि हम जेहन छलहुँ ओहि रुपमे ओ हमरा स्वीकार केलन्हि आ हुनकर प्रेम प्रदान केलन्हि । ताहि अहाँक लम्बा सींग आ छोट पएर होइतो ओ अहाँके वैह रुपमे स्वीकार करताह । मात्र अहाँके स्वीकार करऽ पडत जे हुनकर निर्देशन सभ नहि मानि कऽ अहाँ पाप केने छी आ अहाँके हुनकर प्रेम सहितक अमूल्य वरदान केँ आवश्यकता अछि से बुझऽ पडत । बलवन्त, हमर मालिक जे जीवनक जल देने छथि से पीबु आ शुद्ध होऊ, हुनका द्वारा प्रेम पाउ आ हुनका द्वारा ग्रहण कयल जाउ । बलवन्त प्रेमक मालिक लग गेल आ अपन सभ पापक लेल क्षमायाचना केलक । ओ मालिकक प्रेमक वरदान केँ ग्रहण केलक । ओ स्वीकार केलक जे कतबो कोशिश कयलाक बावजूदो ई प्रेम प्राप्त नहि कऽ सकलौं ।

बलवन्त ई बुझलक जे जतेक चाही ततेक प्रेम ओ बलगर अथवा फूर्तिगर बनि कऽ नहि कमा सकैत अछि । आब ओ बुझलक जे, मालिक केँ लेल असल होयबाक लेल अपने तरीका सभ केँ प्रयास कऽ कऽ पाप केने छल । ताहि बलवन्त स्वीकार केलक जे ओ पापी अछि आ बुझलक जे ओकरा मालिकक ग्रहण आ अमूल्य प्रेमक वरदान केँ आवश्यकता अछि । तकरबाद बलवन्त बुझलक जे मालिक ओकरा सँ प्रेम करैत छथि आ सदा केँ लेल ओकर देखभाल करऽ चाहैत छथि । ओ इहो बुझलक जे आब प्रेम पाबक लेल आ मालिक द्वारा स्वीकार होयबाक लेल कहियो प्रयास नहि करऽ पडत । आब बलवन्त मालिकक आनन्द केँ बुझलक ।

बलवन्त केँ कथा बहुत मात्रा मे हमरे कथा जकाँ अछि (ई कथा के लेखक) । हम औरो जकाँ सुन्दर आ प्रेम पाबऽ योग्य बालक नहि छलौं । हमर अपने माता-पिता हमरा बेसी प्रेम नहि देने छलथि । हम औरो सभ

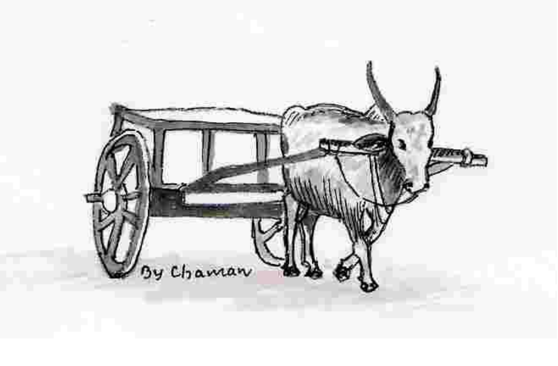

सँ प्रेम पाबऽ चाहैत रही आ ई चाहैत रही जे ओ सभ गोटे हमरा स्वीकार करथि । ताहि सभ सँ नीक विद्यार्थी बनक लेल हम स्कूल मे कडा परिश्रम केलहुँ आ सभ सँ नीक खिलाडी बनक लेल खेलकूद मे कडा परिश्रम केलहुँ । किछु समय के लेल हमर मित्र सभ हमरा स्वीकार करैत छल । मुदा जखन औरो कियो जँ हमरा सँ बेसी फूर्तिगर अथवा सफल होइत छल तऽ ओ सभ हमरा असगरे छोडि दैत छल । तकरबाद हम फेर एकदमे असगर भऽ जाइत छलौं । एकदिन हमर एक मित्र हमरा यीशु के बारे मे सुनौलक । ओ कहलक जे हम सभ गोटे परमेश्वर कँ आज्ञा उलंघन केने छी, हम सभ गोटे पाप केने छी । कतबो प्रयास केलाक बावजूदो हम सभ परमेश्वरक धार्मिकता कँ मापदण्ड तक नहि पहुँच सकैत छी । मुदा परमेश्वर हमरा सभ कँ पूर्ण रुपमे प्रेम पाबऽ आ ग्रहण होयबाक लेल एकटा तरीका देने छथि । ओ अपन एकमात्र पुत्र यीशु मसीह कँ संसारक लोक सभक लेल पठौलन्हि । यीशु एक पूर्ण पवित्रताक जीवन जीलाह । ताहि केओक हुनका पर पापक आरोप नहि लगा सकल । तकरबाद यीशु हमरा सभक पापक लेल पूर्ण बलिदान देलन्हि । ओ अपन जीवन क्रूस पर चढौलन्हि आ अपन खून सँ हमर सभक पाप कँ धोऽ देलन्हि । कारण, यीशु मृत्युक ऊपर विजय प्राप्त कयलन्हि आ मृत्यु सँ जीबि उठलाह । ताहि हम सभ नया जीवन पाबि सकैत छी । ई नया जीवन अनन्त तक कँ लेल होयत । मात्र हमरा सभकँ स्वीकार करऽ पडत कि हम सभ पाप केने छी, स्वार्थी छी । अपना भितर केन्द्रित तौर तरीका सभ सँ घूमऽ पडत आ मात्र ई बुझ पडत जे हमर सभक पापक क्षमादान कँ लेल यीशुक बलिदानक आवश्यकता अछि । तकरबाद परमेश्वर हमरा सभ कँ शर्तरहित प्रेम दऽ कऽ स्वीकार करताह ।

हम हुनकर प्रेम आ स्वीकार कँ एकदमे चाहैत छलौं । हम परमेश्वर मे भरोसा आ विश्वास करबाक निर्णय कयलहुँ । यीशु अपन बलिदान द्वारा हमर सभ पाप कँ क्षमा कऽ देताह से विश्वास करबाक निर्णय कयलहुँ । ई केलाक बाद हम हुनकर शर्तरहित, मूल्यरहित प्रेमक वरदान पयलहुँ । वैह क्षण सँ हमरा ई बुझल अछि जे परमेश्वर हमरा सँ प्रेम करैत छथि आ ओ हमरा स्वीकार केने छथि । ओ हमरा अपना परिवार मे स्वागत कयने छथि आ ओ हमरा अपन संतान सभ मेहक एक संतान कहैत छथि । आब हम एकटा महान परमेश्वर द्वारा एकटा महान प्रेम पयने छी ।

परमेश्वरक वचन कहैत अछि, **“हँ, परमेश्वर संसार सँ एहन प्रेम कयलन्हि जे ओ अपन एकलौता बेटा कैँ देलन्हि, जाहि सँ जे केओ हुनका पर विश्वास करत से नाश नहि होयत बल्कि अनन्त जीवन पाओत ।”** दोसर ठाम परमेश्वरक वचन कहैत अछि, ओकरा सभ कैँ, जे सभ हुनका ग्रहण कयने अछि आ हुनका नाम पर विश्वास केने अछि तकरा सभ कैँ ओ परमेश्वरक संतान होयबाक अधिकार देने छथिन्ह ।

कि अहुँ परमेश्वरक अमूल्य प्रेम, क्षमादान आ हुनकर स्वीकार कैँ ग्रहण करऽ चाहैत छी ? अहाँ कहियो नीक, फूर्तिगर आ बलवान बनवाक प्रयास कऽ कऽ परमेश्वरक प्रेम प्राप्त नहि कऽ सकब । ओ अहाँक लेल मूल्य बिनाक प्रेम देने छथि । हमर पाप सभ क्षमा कऽ दिअ कहि कऽ विनती करु आ यीशु कैँ अपन जीवनक सत्य प्रभुक रुपमे ग्रहण करु ।

विशेष जानकारी के लेल:
असगर बरद
GPO 8975, EPC 2937
काठमांडौ, नेपाल
E-mail: tabernacleministries2006@gmail.com